राजभाषा मासिक पत्रिका

ई-संस्करण फरवरी, 2023
अंक - II

अनुक्रमणिकाएँ

अध्यक्ष की कलम से
सदस्य-सचिव की मेज से
संपादकीय
इस माह के चयनित साहित्यकार
कविताएँ
मधुबनी चित्रकारिता – एक अध्ययन
लहराए तिरंगा प्यारा
CMP मॉड्यूल प्रारम्भ
मेंटल वेल-बिंग
राजभाषा के संवैधानिक प्रावधान
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक
नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि
हमारा परिवार – सुर्खियों में
निज भाषा की उन्नत्ति – अहै सब उन्नत्ति के मूल – प्रेरक प्रसंग श्री संजय प्रियदर्शी द्वारा
नैगम सामाजिक उत्तरदायित्व
हिन्दी को जनमत की भाषा बनाना – वगैर अपनी मातृभाषा भूले – लेख श्री सोमेश दासगुप्ता

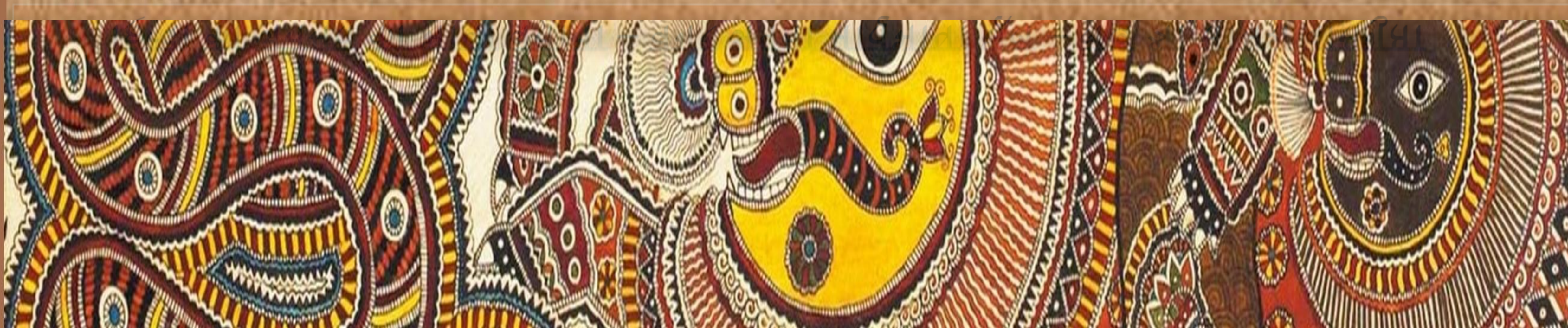

निगम अध्यक्ष महोदय के दो शब्द

राजभाषा के प्रगामी प्रगति को गति प्रदान करने की महत्वपूर्ण कड़ी - ई – पत्रिका है जिसका फरवरी अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका को कार्यालय सहायिका के रूप में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित उपयोगी सहायिका सामग्री के प्रयोग हेतु प्रकाशित किया गया है।

कार्यालयीन दायित्वों का सम्यक निर्वहन में यह काफी अहम सिद्ध होगा यह मेरा विश्वास है। इसी मनयोग,तत्परता और परिश्रम से इस कार्य को इसी तरह निर्धारित समय में पूरा करते हुए राजभाषा के बढ़ते चरण में चार चाँद लगाते रहेंगे।

कार्यालयीन कार्य में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करते हुए भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य को शत-प्रतिशत प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है।

शुभकामनाओं सहित !

राम नरेश सिंह
अध्यक्ष

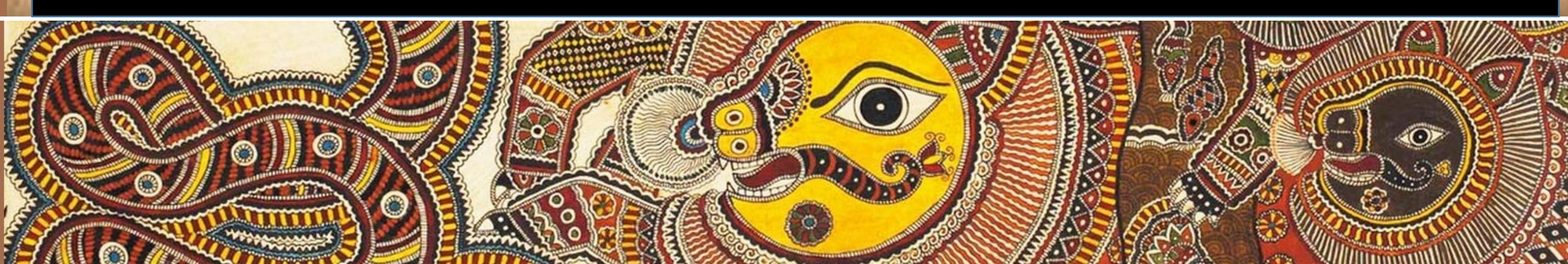

सदस्य-सचिव महोदय के दो शब्द

आइए ! हम सब मिलकर राजभाषा के प्रचार –प्रसार में आ रहें चुनौतियों का समाधान करते हुए राजभाषा के कार्यान्वयन के अनुपालन को गति प्रदान करें। जैसा कि हम सब इस बात से अवगत हैं कि राजभाषा के नियम – अधिनियम का अनुपालन करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। केवल संवैधानिक दायित्व ही नहीं वरन हमारा अन्तर्मन से राजभाषा के प्रति लगाव होने के कारण हमारा यह प्रयास रहा हैं कि हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हो और इसी का सार्थक परिणाम ई –पत्रिका का प्रकाशन के रूप में दृष्टिगत हो रहा हैं। हिन्दी के प्रयोग के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले निर्धारित लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता हैं। हम दैनिक कार्यलयीन कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने का सुनिश्चयन करें। चलिए! इसे पल्लवित व प्रस्फुटित करते हुए इसकी सुरभि चतुर्दिक फैलाए। इसलिए मन बरबस कह उठता है-

"हिन्दी को आगे बढ़ाना हैं , उन्नति के राह पर ले के जाना हैं ,
मन गर्वित हो उठता,जब पढ़ता हूं,लिखता हूं हिन्दी"।

जय भारत,जय हिन्दी।

शुभकामनाओं सहित !

(डॉ जॉन मथाई)

सदस्य-सचिव

सम्पादकीय

राजभाषा ई – पत्रिका का फरवरी माह का संस्करण आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस बार गणतंत्र दिवस विशेष अंक मधुबनी चित्रकारिता को मुख्य रूप से शामिल कर प्रस्तुत किया गया है। इस अंक में मधुबनी चित्रकारी पर विशेष लेख भी शामिल किया गया है तथा उसमें दिखाया जाने वाला चित्र भी उसी रचनाकार द्वारा बनाया गया है।

ई –पत्रिका राजभाषा के प्रचार – प्रसार का सशक्त मंच है। सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और पत्रिका को समृद्धि करने के लिए दाघानि के सभी अधिकारियों व कार्मिकों को कोटि-कोटि साधुवाद।

ई – संस्करण से राजभाषा का प्रचार – प्रसार निसंदेह बढ़ेगा। साथ-साथ हमारे कार्मिकों की हिंदी के प्रति अभिरुचि भी बढ़ेगी। हमारा उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा की प्रगति है। इसके प्रकाशन से राजभाषा के कार्यान्वयन को बल मिलेगा।

राजभाषा हिंदी में समरसता है। हम भारत सरकार के दिशानिर्देशानुसार सरल शब्दों का प्रयोग करें न कि क्लिष्ट शब्दों का। किसी ने ठीक ही कहा है –

जन-जन की भाषा है हिंदी भारत की आशा है हिंदी
जिसने देश को जोड़े रखा है वो मजबूत धागा है हिंदी।

शुभकामनाओं सहित !

(राकेश रंजन)
कार्यपालक निदेशक (मासं)

इस माह के चयनित साहित्यकार सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ एक प्रसिद्ध कवि व लेखक थे। हिन्दी साहित्य के छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक थे। इसके अतिरिक्त वे एक लेखक, कहानीकार, कवि, उपन्यासकार, निबंधकार एवं संपादक भी थे । उनकी कविताएँ बहुत लोकप्रिय रही हैं। लेखन के अलावा वे स्केच भी बनाते थे।

उनकी सारी रचनाएँ ‘निराला’ के नाम से प्रकाशित होती थी, जबकि उनका वास्तविक नाम सूर्यकान्त त्रिपाठी था।

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ का जन्म 21 फरवरी 1896 को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी थे जो एक सरकारी नौकरी करते थे। पश्चिम बंगाल में पैदा होने के कारण, निराला की मातृ भाषा बंगाली थी। जब सूर्यकान्त बहुत छोटे थे तब उनकी माता का देहांत हो गया था। माता के जाने के बाद, निराला का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों में बीता।

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ की कविताएँ – अणिमा,अनामिका,अपरा,अर्चना,आराधना,कुकुरमुत्ता,गीतगुंज, गीतिका,जन्मभूमि,जागो फिर एक बार,तुलसीदास, तोड़ती पत्थर, ध्वनि, नये पत्ते, परिमल, प्रियतम, बेला, भिक्षुक, राम की शक्ति पूजा,सरोज स्मृति, उपन्यास – अप्सरा,अलका,इन्दुलेखा,काले कारनामे,चमेली,चोटी की पकड़, निरुपमा, प्रभावती कहानियाँ – चतुरी चमार,देवी,सुकुल की बीवी,साखी,लिली निबंध-चयन,चाबुक,प्रबंध पद्य,प्रबंध प्रतिमा,प्रबंध परिचय,बंगभाषा का उच्चारण,रवीन्द्र-कविता-कानन, संग्रह

मेरा फ़ितूर

ये ज़िंदगी तुझसे जुड़े
रहना आसान तो नहीं
तेरे दहलीज पे हम
बेचैन
खड़े है सदियों से ।
फिर भी न इलितजा है
हिजर-ए-यार' की,
ये समझ न पाए
मैं गलत हूं या तू है
सही ।
एक खामोशी जो छाए
हैं दोनो होठ के दरमियां
- शायद लब्जों की
तलाश आज भी जारी हैं
ऐसे तो कितने लम्हा
खो गये हैं ;
कितने ज़िंदगी हुए
बरबाद !
फिर भी तेरे सोहबत से
तौबा करे न कोई – तू
तो एक अनोखा राज़ है !
जिसे कोई समझ न पाए
पर ये फ़ितूर
मेरा मुझे
सराबोर करें
मेरी ज़हन
तेरी ओर करे
– और आज ये
एहेड मैं
करता हूँ -
अश्क का
तोहफा मिले
या
जिल्लत से नवाजो मुझे
कोई खौफ या गीला नहीं
चाहे तूफान से गुज़रना पड़े
कोई फिकर नहीं मैं एक
गुमराह शायर –
तेरी बसर , तेरी बंदगी - करता ही रहूँगा ;
फ़ना होने के बाद भी - वक़्त के आर पर ....

प्रशांत कान्त गोस्वाम (पाली प्रभारी अभिभयंता)

पग विजय मार्ग चल

है दुर्गम पथ अतिदुष्कर,
कर मन-संकल्प प्रबल,
अविरल अटल अग्रसर,
पग विजय मार्ग चल |

सर्प विषाक्त विजयपथ घेरे,
बाधाएं संकट बहुतेरे,
विकर्षी दुर्जय दनुज विवाषना, छल-कपट,
कट,
लोभ,
न बैठो खिन्न अधोमुख,
पराजित श्रांत विकल,
उठो अभीर अनामय,
दृढ़ भारत-वीर सबल,

अजेय अथक निरंतर,
पग विजय मार्ग चल

अडिग विवेक स्थिर लोचन,
समर्थ बाहु हे वीर विक्रम,
मन अश्व अधीर पाश धरो,
विक्रांत उठो अब युद्ध करो,

है भार अपार तले धरा,
व्याकुल नयन सजल,
दनुज मनुज सम भेष धरे,
नहीं जय यज्ञ सरल,

सशक्त सवेग निशि-वासर,
पग विजय मार्ग चल |

- विक्रम सिंह -

कैसे देश को पथ पर लाऊँ-
दामोदर को वरदान बनाऊँ,

नेहरू की चिंता बढ़ी ।
कल-कारखाने विकसित हो
–बाढ़ का भी हो निदान,

ध्यान ऊर्जा पर पड़ी ।।
शत-शत नमन है साहा की,
चुनौती को स्वीकार किया ।
दाघानि निर्माण कराकर,
देश का बेड़ा पार किया ।।

समृद्धि खुशहाली की,
बनकर किरण आई है ।
दामोदर की घाटी में, निगम
लेती अगड़ाई है ।।

ईद –गिर्द है काला सोना,
बैठी गर्भ में बिजली है ।
उगल रही है धरती सोना,
श्रेय तुम्हारा जाता है ।
अग्रसर प्रगति पथ पर, देश
स्वंय को पाता है ।।

खास ध्यान है सेहत की,
घाटी का इकलौता है ।
प्रदूषण से दाघानि, न करता
समझौता है ।।
बनी आज तुम देश का
गौरव, अभिमान क्षेत्र का
तुम पर है ।
नमन करू मैं आज तुम्हें,
शीश झुकाते हमसब हैं ।।

सुशील कुमार सहायक
नियंत्रक (विद्युत)
जीओएमडी,रामगढ़

चित्र: देवयानी मल्लिक

मधुबनी चित्रकारी

चित्रकारी मानव के विचारों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है । भारत विभिन्न चित्रकारी कलाओं में से मधुबनी चित्रकारी एक प्रसिद्ध रूप है । कहा जाता है कि मधुबनी चित्रकारी राजा जनक की बेटी सीता के जन्म स्थान मिथिला के प्राचीन शहर में विकसित हुई थी । बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित होने के कारण इसे मिथिला या मधुबनी कला कहा जाता है ।

ऐसा कहा जाता है कि अयोध्या के राजा ने भगवान राम से अपनी बेटी के विवाह के उपलक्ष्य में यह चित्रकारी बनवायी थी । इसे कुलीन कला या उच्च जातियों की कला के रूप में मान्यता दी गई थी । समय के साथ -साथ यह सामाजिक रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं के रूप में घरेलू कला के रूप में विकसित होता रहा । इस कला रूप के प्रचार के साथ-साथ इसकी मांग बढ़ती गयी एवं कलाकार खुद को दीवारों तक सीमित न रखकर इस कैनवस, कागज एवं अन्य वस्तुओं पर चित्रकारी करना शुरू कर देते हैं । मधुबनी चित्रकारी द्वैतवाद के सिद्धांतों पर आधारित एक जीवित परंपरा है, जो विपरीत द्वैत में चलते हैं - दिन या रात, सूरज या चंद्रमा, आदि । यह चित्रकारी समग्र ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करती है, जो देवताओं, सूर्य एवं चंद्रमा, वनस्पतियों एवं जीवों से भरा हुआ है । इसमें बौद्ध धर्म, तांत्रिक प्रतीकों, इस्लामी सूफीवाद तथा शास्त्रीय हिंदू धर्म के प्रतीक भी शामिल हैं । रंग जीवन के पांच मूल तत्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश तथा वायु द्वारा नियंत्रित होते हैं । इन्हें विभिन्न रंगों द्वारा निरूपित किया जाता है; पीले रंग से पृथ्वी, सफेद रंग से पानी, लाल रंग से आग, नीले रंग से आसमान एवं काले रंग से हवा । इन तत्वों को तीन मूल रूपों - त्रिभुज, वृत्त एवं वर्ग का उपयोग करके भी चित्रों में समझाया गया है । परंपरागत रूप से ये चित्रकारी ब्राह्मण और कायस्थ महिलाओं द्वारा की जाती थीं । 1970 के दशक के उपरात से यह कलारूप धीरे-धीरे प्रचलित होने लगा तथा यह आय का एक स्त्रोत भी बनता चला गया । बाद में यह भी पता चला कि हरिजन महिलाएं भी अपनी झोपड़ियों की दीवारों को ऐसे चित्रों से सजाया करती है । हालांकि, उनकी पेंटिंग शैली एवं सामग्री के तथ्य में भिन्नता है । ब्राह्मण महिलाएं चमकीले रंगों के साथ एक मुक्त रचना पसंद करती हैं; कायस्थ महिलाएं रेखाचित्र तथा व्यक्तिगत दृश्यों के घेरे पर ध्यान केन्द्रित करती हैं । अब इन चित्रणों में पारंपरिक रूप के साथ विभिन्न शैलियों का भी मिलान देखने को मिलता है । समय के साथ कुछ महिला चित्रकारों ने इस मधुबनी कला के क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान बना ली है, जैसे - चिरी गाँव की गंगा देवी, रांथी गाँव की जगदंबा देवी, जितवारपुर गाँव की सीता देवी और यमुना देवी । 1980 के दशक के प्रारम्भ में, भारत के त्योहारों ने यूनाइटेड किंगडम में कई सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय एवं लोक चित्रों को प्रोत्साहित किया । आज के समय में आधुनिक मधुबनी पेंटिंग साड़ियों, स्टोल, बैग, घड़ियां आदि पर भी देखी जाती हैं । मिथिला की कला अद्वितीय है, क्योंकि यहाँ हम समझ, संस्कृत तथा संस्कृति के ज्ञान, शब्दावली एवं आइकनोग्राफी का एक अनूठा मिश्रण देख सकते हैं ।

देवयानी मल्लिक
हिंदी अधिकारी

CORPORATION

लहराए तिरंगा प्यारा

मैथन परियोजना में CMP MODULE प्रारम्भ

मेंटल हेल्थ एण्ड वेल-बिंग पर 18.01.2023 को आयोजित संगोष्ठी
प्रवक्ता – डॉ राजश्री नियोगी,
आर.जी.कॉर मेडिकल कॉलेज, कोलकाता

राजभाषा संवैधानिक प्रावधान के कुछ तथ्य :

- संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में 14 सितंबर 1949 को स्वीकार किया
- संविधान के भाग 5,भाग 6 तथा भाग 17 में राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान दिए गए है
- संविधान के भाग 5,भाग 6 तथा भाग 17 में राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान दिए गए है
- संविधान के अनुच्छेद 344(1) के अनुसार राजभाषा आयोग गठन 07 जून 1955 को हुआ
- संविधान के अनुच्छेद 344 के अनुसार संसदीय राजभाषा समिति के गठन का उलल्लेख है जिसमें लोकसभा से 20 एवं राज्य सभा से 30 सदस्यों को शामिल किया जाएगा
- संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएँ शामिल की गयी हैं
- राजभाषा अधिनियम 10 मई 1953 को पारित किया गया तथा 9 धाराएँ हैं

निगम मुख्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

नेताजी सुभाष चंद्र बोस को उनके 123वें वर्षगांठ पर श्रद्धांजलि

निगम मुख्यालय एवं प्रतिष्ठान

इन-सेट

हमारा परिवार

निगम अध्यक्ष महोदय द्वारा तिमाही (अक्टूबर- दिसंबर,2022) के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यप्रदर्शन के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया "

"हार्दिक बधाई"

श्री शुभव्रत साहा, अधीक्षण अभियंता, संविदा एवं सामग्री प्रबंधन विभाग, कोलकाता

श्री विक्रमजीत सिंह गिल, कार्यपालक अभियंता, वाणिज्यिक विभाग, कोलकाता

सुश्री सर्बानी घोष, कार्यालय अधीक्षक, चिकित्सा विभाग, कोलकाता

दामोदर घाटी निगम के सह प्रयोजन से द स्टेट्समैन द्वारा आयोजित वेन्टेज कार रैली

विद्युत खेल नियंत्रण परिषद, भारत सरकार द्वारा आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिता में श्रीमती साथी कर्मकार, मैथन, डीवीसी ने महिला खिताब जिता

BIMTECH BIRLA INSTITUTE OF MANAGEMENT TECHNOLOGY | AACSB ACCREDITED

BIRLA INSTITUTE OF MANAGEMENT TECHNOLOGY
Centre for Management Development & Consultancy
Greater Noida, India

This is to certify that

MR. SANJAY PRIYADARSHI

has been awarded

THE BEST STORYTELLER

in the training program

BRANDING THROUGH STORYTELLING

Organised by BIMTECH, Greater Noida
January 30 – 31, 2023

Prof. Saloni Sinha, Program Director, BIMTECH | Prof. Manoj K. Pandey, Chairperson, CMDC, BIMTECH | Prof (Dr.) H. Chaturvedi, Director, BIMTECH

विगत 30 एवं 31 जनवरी 2023 को निगम द्वारा मुझे एवं घाटी के अन्य परियोजनाओं से 6 अन्य अधिकारियों को दिल्ली में एक प्रशिक्षण कार्य हेतु नामांकित किया गया। जिसमें अन्य संस्थानों से भी लोग थे । पूरा प्रशिक्षण अंग्रेजी में ही था । प्रशिक्षण के दौरान एक टास्क में सभी प्रतिभागियों को एक कहानी या संस्मरण या बायोग्राफी 500 शब्दों में लिखने का कार्य दिया गया। मैने जिन्दगी में कभी कोई कहानी या कविता नहीं लिखी पर उस दिन प्रोग्राम कोर्डिनेटर के उत्साहवर्धन के पश्चात मैने एक कहानी हिंदी में लिखी और उसे पढ़ा। बाकी प्रतिभागियो ने अंग्रेजी में लिखा और पढ़ा । उनकी कहानियां वाकई बहुत ही उम्दा थी, जिसमे हमारे CPRO , श्री अरिजित कुंडु साहब का आर्टिकल एवं भाषा शैली भी बेहतरीन थी । आप सभी की दुआओं से मेरी कहानी और वाचन शैली को सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। जज डा अमित नागपाल , ब्लॉगर अलायंस के अध्यक्ष थे । दाघानि को कोटिशः धन्यवाद मुझे एक मंच प्रदान करने के लिए । मेरी कहानी दाघानि पर ही थी । जय दाघानि जय हिंदी ! आज मुख्यालय से हिन्दी अधिकारी, श्री आशुतोष पांडे जी के आग्रह पर उसी कहानी को पुनः प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

मेरी कहानी

मैं दामोदर हूँ, कुछ लोग मुझे देवनद कहते थे , तो कुछ लोग river of sorrow यानि दुखों की नदी तो कुछ लोग मुझे बंगाल का अभिशाप कह कर पुकारते थे। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, अब सबकुछ मेरे वश में तो नहीं था न, फिर मेरी उम्र का भी असर था। मैं भी इठलाती, बलखाती अपनी ही धुन में बहती रहती । जब क्रोध आता तो बरसात में अपने सामने पड़ने वाले सारे खेत, खलिहान, घर, द्वार, संपत्ति यहाँ तक लोगों का भी लील लेती । मुझे इसमें बड़ा मज़ा आता । अपार शक्ति की मालकिन थी मैं । ये सैकड़ों वर्षों तक चला । फिर कुछ लोग आए, सुना है उसमे डॉ मेघनाद साहा, बर्दवान के महाराजा और कई गण मान्य भी थे ।

इन लोगों ने अमेरिका के Tennessee Valley Authority के तर्ज पर स्वतंत्र भारत के नवगठित मंत्री मण्डल के सामने एक ड्राफ्ट पेश किया, जहां Central Technical Power Board की स्थापना हुई। और फिर मेरे ही नाम पर 7 जुलाई 1948 को स्थापना हुई एक निगम की, नाम रखा **"दामोदर घाटी निगम"**। ये स्वतंत्र भारत की प्रथम बहूद्देशीय परियोजना थी।ये संसद से संचालित होती है। इन इंसानों ने मेरे ऊपर और मेरे बहाव क्षेत्र में, बांध, पनबिजली केंद्र और ताप विद्युत केंद्रों के स्थापना की मंजूरी लेली। मैं भी कौतूहलवश इन्हे देखती रही। इन्होंने मेरी शक्ति को अपने कल्याण में लगाने की रूपरेखा बनाई । इन्होंने चार बड़े बड़े बांध बनाए (मैथन, पंचेत, तिलैया और कोनार में) । फिर दौर आया ताप विद्युत केंद्रों का । जहां बोकारो , चंद्रपुरा, दुर्गापुर, मेजिया, कोडरमा, रघुनाथपुर, अंडाल इत्यादि क्षेत्रों में बड़े बड़े ताप विद्युत केंद्र स्थापित किए । मैं भी धीरे धीरे शांत होने लगी और अपने आस पास के बदलाव को महसूस करने लगी। अब मुझे भी ये अच्छा लगने लगा है। जो सुख मुझे पहले इनको रोते बिलखते देख कर लगता था, उससे कहीं अधिक आत्मिक शांति मुझे इनके हँसते मुसकुराते और खिलखिलाते चेहरों को देख कर लगता है। मेरे पूरे जलग्रह क्षेत्र जहां पहले घोर गरीबी व अशिक्षा फैली हुई थी , वही अब सुख समृद्धि फलफूल रही है। इस निगम के अस्तित्व में आने के बाद मेरे चारों ओर नए नए कल कारखानों की स्थापना हुई। लोगों को रोजगार मिला, खुशहाली फैली । मैंने वो मंजर भी देखा है जब किसी के जन्म पर उसकी पहली सांस उसकी आखरी सांस बन गई क्यूंकि चिकित्सा का अभाव था। आज यहाँ कम से कम रोग से कोई नहीं मरता। मैं भी अब इनकी जरूरतों को समझने लगी हूँ । मैंने अपने प्राकृतिक सौन्दर्य को और बढ़ा लिया ताकि इस निगम का रूप और निखर जाए, आखिर मेरा ही नाम है न। इन्होंने अपना मुख्यालय कोलकाता में रखा है। मैं बंगाल और झारखण्ड (तब के बिहार) राज्य में फैली हुई हूँ। सन् 2030 इनकी क्षमता 15000 mw हो जाएगी। स्थापना काल से ही मैं इनकी हर गतिविधि में शरीक रही हूँ। अब तो इसके कदम सौर ऊर्जा की ओर बाढ़ चले हैं। कल तक जहां में जंगल झाड़ से हो कर गुजरती थी, आज अपने दोनों ओर बसे खूबसूरत शहरों और औद्योगिक नगरों से होकर गुजरती हूँ। इस निगम में कार्यरत लोग या फिर दूर दूर के सैलानी जब मेरे प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने आते हैं तो गर्व से मैं भी चौड़ी हो जाती हूँ। आपको पता है ये निगम अपने सामाजिक दायित्व को नहीं भूला है। बाढ़ नियंत्रण, विद्युत उत्पादन के अतिरिक्त ये सिंचाई सहित कई सामाजिक गतिविधियों में शामिल होता है। आस पास के गाँव मे पक्की सड़कें, विद्यालयों का निर्माण, प्रशिक्षण, मत्स्य पालन इत्यादि अनगिनत कार्यक्रम सालों भर चलते रहते हैं। इस DVC ने मुझे बंगाल का अभिशाप से बंगाल का वरदान में बदल दिया ।

आप भी कभी आओ और मेरे अंदर आए इस बदलाव को महसूस करो। इन मानवों के देख कर मुझे चंद पंक्तियाँ याद या रही हैं -

जिंदगी गोद में उठा उठा लहराती है, आशाओं की भीषिका झेलने वालों को
और बड़े शौक से मौत पिलाती है जीवन, अपनी छाती से लिपट खेलने वालों को ।

संजय प्रियदर्शी, सहायक प्रबंधक
मैथन परियोजना, कर्मचारी संख्या - 329878

सामाजिक नैगम उत्तरदायित्व (सीएसआर)

दामोदर घाटी निगम चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र व निगमित सामाजिक दायित्व विभाग द्वारा सोमवार 30 जनवरी 2023 को चंद्रपुरा प्रखंड के तारा नारी उच्च विद्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि बच्चे समाज , राज्य और देश का भविष्य है। बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास के लिए आयोजित खेल को खेल भावना से अनुशासन में खेलना चाहिए। श्री पांडेय ने कहा कि निगम प्रबंधन चंद्रपुरा के क्षेत्र में विकास के लिए निगमित सामाजिक दायित्व के तहत प्रयासरत है। विभाग द्वारा कई विकासात्मक कार्य किए गए हैं और आगे भी निरंतर ऐसे विकासात्मक कार्य किए जाते रहेंगे । समारोह से पूर्व श्री पांडेय का स्वागत स्थानीय जनप्रतिनिधियों और डीवीसी के अधिकारियों ने किया। कार्यक्रम में परिचय, मार्च पास्ट , स्वागत गीत गणेश वंदना कई सांस्कृतिक आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। समारोह का संचालन संगीता पुरी ने किया। खेलकूद प्रतियोगिता में एक सौ , चार सौ, 800 मीटर दौड़, हाई जंप , शॉट पुट आदि का आयोजन किया गया। खेल प्रतियोगिता में उच्च विद्यालय तारा नारी, उच्च विद्यालय तरंगा , त्रिगुणायत स्मारक उच्च विद्यालय नर्रा, नव प्राथमिक विद्यालय जमुनिया टांड़, संत मैरी डे स्कूल देवाबांध , उच्च विद्यालय तारा नारी, फाल्कन मिशन स्कूल जरुआ मदनपुर, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर तेलो, सर्वोदय शिशु मंदिर तारानारी, सर्वोदय उच्च विद्यालय , + 2 उच्च विद्यालय तेलों , इंडियन पब्लिक स्कूल जूनोरी एसआर इंटरनेशनल स्कूल नर्रा आदि विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

खेल-कूद

डीएसटीपीएस में राजभाषा

डीवीसी, डीएसटीपीएस में राजभाषा अनुभाग का उद्घाटन, पोस्टर का लोकार्पण व शब्दावली वितरण संपन्नअंडाल, दुर्गापुर : राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक और क़दम बढ़ाते हुए दिनांक 02.11.2022 को दामोदर घाटी निगम, दुर्गापुर इस्पात ताप विद्युत केंद्र, अंडाल के मानव संसाधन विभाग के अंतर्गत राजभाषा अनुभाग का उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान श्री सुनील प्रसाद और मुख्य अभियंता (ओ व एम) श्री मनोज कुमार ठाकुर ने अपने कर कमलों से फ़ीता काटकर किया तथा उद्घाटन पट्ट का अनावरण किया। मौके पर तीन राजभाषा पोस्टरों का लोकार्पण किया गया। अपर निदेशक(मां.सं.) श्रीमती गोपा चक्रवर्ती ने डीवीसी द्वारा प्रकाशित प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली की एक-एक प्रति सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों में वितरित कीं। उद्घाटन के उपरांत कार्यालय कक्ष में परियोजना प्रधान श्री प्रसाद ने सबके प्रति शुभकामनाएं व्यक्त कीं एवं हिंदी में अधिकाधिक काम करने पर बल दिया तथा डीएसटीपीएस में मिल-जुल कर राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने की अपील भी की।

डीवीसी, डीएसटीपीएस में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण का शुभारंभ दिनांक (29 जुलाई 2023) जिसमें कुल 25 प्रशिक्षण थी नामित हुए। वर्तमान सत्र मई, 2030 में कूल 67 अधिकारी व कर्मचारी प्रशिक्षणरत।

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित विभागीय प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेता की स्व-रचित रचना

हिन्दी को जनमत की भाषा बनाना , बगैर अपनी मातृभाषा के महत्व को भूले

हमारे देश में मातृभाषा की महत्व असीम है । बच्चे शुरू से ही अपनी - अपनी मातृभाषा को सीखने के लिए तत्पर रहते है। साथ ही उनके माता- पिता का भी बड़ा योगदान रहता है। लेकिन आज के समय में हिन्दी भाषा की चर्चा और उपयोगिता पहले से कई गुणा बढ़ गई है। पूरे देश मे इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह मानना उचित होगा कि हिन्दी भाषा का प्रसार इस देश के कोने-कोने में किया जाना चाहिए।

हिन्दी तो सबसे सरल भाषा में से एक है। देश के अधिकतर जनमानस ने इसे अपनाया है। अहिन्दी भाषी क्षेत्र जैसे दक्षिण और पूर्वोतर भारत में इसका प्रचलन बढ़ रहा है। सरकार से भी यह कोशिश की जा रही है कि इसका उपयोग सभी स्तर पर हो। अब हम नागरिकों की यह जिम्मेवारी बनती है कि कैसे हिन्दी को जनमत की भाषा बनाना है। हमें अपने बच्चों को भी हिन्दी सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जागरूकता बढ़ाने के साथ –साथ इसका समय- समय पर मूल्यांकन करना अनिवार्य है। सभी स्कूल , कॉलेज में हिन्दी के प्रसार के लिए कार्य करते रहना है। सभी विषयों खास कर उच्च शिक्षा के पुस्तकों को भी हिन्दी में अनुवाद करना चाहिए । साथ-साथ हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि अपनी मातृभाषा की गरिमा कम न हो । भारत सरकार अपने कार्यालयों में जैसे हिन्दी विभाग की स्थापना की है , ठीक उसी तरह हर राज्य सरकार भी अपने स्तर पर इसका प्रसार पर ध्यान दें। अभी भी हमारे देश में कुछ क्षेत्र ऐसे है जहाँ हिन्दी का प्रयोग बिल्कुल ही नहीं होता है। हमें इन सब क्षेत्रों पर ध्यान देना है। निजी क्षेत्र खासकर मीडिया, मोबाइल कम्पनियाँ आदि को भी आगे बढ़ कर काम करना पड़ेगा।

निरंतर प्रयास से यह जनमत की भाषा बन सकती है , साथ ही हमारी मातृभाषा जो हमारी धरोहर है उसकी अहमियत भी कम न होगी

सोमेश दास गुप्ता,
निदेशक, स्वास्थय सेवाएं

नव्य@कांक्षा
(01.01.2023)
(1)
नेत्र नम, न हो दिल मायूस,
विचार सम का व्यापार रहे
कॉर्नर में हो जहाँ अँधेरा सदा,
सपने वहाँ सबल साकार रहे
जीवन उद्योग में नेह-निवेश कर,
योगक्षेम का कारोबार रहे
धरती पखारती उठ सागर तरंगें,
सात समंदर सर्व धार रहे
जनवरी तेईस का तेज़ चढ़े,
बितल तमन्ना उजियार रहे
कलियों की महक मियाँ मयूख
भौंरे का हरदम गुंजार रहे
(2)
अनादि से आजतक साथ चलने के आदी होते रहे हैं हम।
कैफ़ीयत भू-भारत की, हाथ से हाथ मिलाते रहे हैं हम।।

....✍️मो. इस्माईल मियाँ, हिंदी अधिकारी
डीवीसी, डीएसटीपीएस, अंडाल, दुर्गापुर (प.बं.)

हिन्दी में काम करें, हिन्दी का सम्मान करें – कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) के अंतर्गत राजभाषा स्कंध की ओर से प्रचार – प्रसार के हित में जारी – सादर

सम्पादकीय पता – कार्यपालक निदेशक (मा.सं.), दामोदर घाटी निगम, 1/16 वीआईपी रोड, डीवीसी टावर्स, कोलकाता – 700054
ई-मेल – pinkisasmal5@gmail.com
दूरभाष - 8777672605

अस्वीकरण – ई-संस्करण पत्रिका में प्रकाशित रचनाकारों के विचार उनके अपने हैं। यह आवश्यक नहीं की सम्पादक मंडली उनके विचार और मंतव्यों से सहमत हो